५०: मानव धर्म

दिनांक -१७/०१/२०१२

सुख, शांति, संतोष, आनंद के रूप में मानव धर्म को पहचाना जाता है | सह-अस्तित्ववादी विधि से अध्ययन करने से पता चला कि समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व में अनुभव प्रमाण सहित मानव धर्म सफल होना पाया जाता है | इसे भली प्रकार से जाँचा गया है, जीकर देखा गया है | इसी आधार पर संसार के सम्मुख चेतना विकास मूल्य शिक्षा को प्रस्तावित किया है | समाधान के बराबर में सुख होना देखा गया है | इसी के साथ समाधान, समृद्धि के साथ सुख, शांति का होना देखा गया है | समाधान, समझदारी के आधार पर, समृद्धि श्रम के आधार पर होना पाया गया है | इनमें से हर व्यक्ति में समाधान, समानता का आधार बनता है | प्रधान रूप में हर नर-नारी में समाधान तथा श्रमपूर्वक समृद्धि ही समानता है | श्रम का व्यवस्था स्वरूप एक से अधिक व्यक्ति के साथ ही है | जीव संसार, वनस्पति संसार, पदार्थ संसार पहले से मानव को प्राप्त रहता ही है | इन्हीं के ऊपर श्रम नियोजनपूर्वक हम प्रतिफल पाते हैं | मानव–मानव के साथ सेवा-सहकारिता के साथ प्रतिफल पाता है | प्रतिफल ही मानव की समृद्धि का मूल आधार है |

इसी प्रकार मानव परस्परता में पारितोष, पुरस्कार होना एक स्वयंस्फूर्त उदारता का प्रमाण है | इस प्रकार हर परिवार स्वधन का अनुभव करना सम्भव हो गया है | इसी बीच समाधान के आधार पर मानव सुखी होना; समाधान, समृद्धि के आधार पर हर परिवार सुख, शांतिपूर्वक जी पाना, तथा सुख, शांति, संतोष के लिये समाधान, समृद्धि, अभयता को प्रमाणित करना होता है | अभयता तभी माना जा सकता है जब धरती पर सर्वाधिक मानव परिवार रूप में अथवा समस्त परिवार रूप में भ्रम-मुक्त और अपराध-मुक्त होकर जीता है | अपराध मनुष्येतर प्रकृति के साथ और मानव के साथ देखा जाता है | मानव परस्परता में अपराध, शोषण, संघर्ष युद्ध के रूप में ही है | मनुष्येतर प्रकृति के साथ शोषण के रूप में है | मनुष्येतर प्रकृति में शोषण विधि से असंतुलन होना स्वाभाविक रहा; जिससे धरती तापग्रस्त होना प्रमुख रहा तथा जंगल, झाड़ी अनानुपाती विधि से शोषण होना पाया गया | यह सभी कार्य मानव से घटित हुआ है | जीव संसार परस्पर जीवों को खाता है तथा वनस्पति संसार के साथ जीता है और जंगल को काटता नहीं है | वैसे ही झाड़, पत्थर भी शोषण, युद्ध, संघर्ष नहीं करते | संघर्ष केवल पेट के लिये रहता है | दूसरी भाषा में पेट भरना सभी जीव जानते हैं | चींटी भी पेट भरता है, हाथी भी पेट भरता है | हाथी बड़ा पेट वाला, चींटी छोटा पेट वाला है | छोटा पेट वाला चींटी संग्रह करता है, बड़ा पेट वाला हाथी संग्रह नहीं करता है |

सुविधा, संग्रह विधि से आंकलित करने पर मानव को पता चलता है कि बड़ा पेट वाला ज्यादा भूखा होना देखा जाता है क्योंकि एक वाले को दस चाहिए, दस वाले को सौ चाहिए, सौ वाले को हजार, हजार वाले को लाख, लाख वाले को करोड़, करोड़ वाले को अरब, अरब वाले को खरब चाहिए | इस क्रम में भूख व्यवस्था देखने को मिलती है | इस क्रम में ज्ञान होता है कि उद्योगों को, कोष व्यवस्था को, अधिकार व्यवस्था को विकेन्द्रीकरण करना आवश्यक है | इसमें से प्रधान रूप में ऊर्जा संतुलन का, प्रौद्योगिकी का विकेन्द्रीकरण करना आवश्यक है | सहअस्तित्व विधि से यह अध्ययन कराया जाता है | चेतना विकास क्रम में हर एक ग्राम को अथवा ग्राम पंचायत को विकल्पात्मक ऊर्जा के लिये स्थानीय व्यक्तियों को कुशल कारीगर बनाना व्यवस्था का एक अंग है | इस प्रकार हर मोहल्ला/ ग्राम पंचायत ऊर्जा संतुलन के अर्थ में काम करना बन जाता है | हर व्यक्ति में श्रम नियोजन प्रवृत्तियों को विकसित करने का अधिकार सम्पन्न होता है |

इस क्रम में हर गांव मोहल्ला को आहार, आवास, अलंकार सम्बंधी वस्तुओं और दूरगमन, दूरश्रवण, दूरदर्शन संबंधी वस्तुओं को सुलभ होने के लिये प्रशिक्षित करना, सम्पूर्ण ग्रामवासी श्रम नियोजनपूर्वक ग्राम की आवश्यकता को पूरा करना ही पूरकता सम्बंध है | व्यापार पूरकता सम्बंध नहीं है | इस प्रकार अपने श्रम का मूल्यांकन एक आवश्यकीय पद्धति रहती है | इस पद्धति से वस्तुओं के सम्बंध में आवश्यकताओं का पूरकता सम्बंध बना रहता है | समझदारी, जागृति के अर्थ में सम्पन्न होता है | चेतना विकास मूल्य शिक्षा विधि से चेतना विकासपूर्वक ही मानव परम्परा जागृत होना सम्भव है | जागृतिपूर्वक अथवा जागृति सहित परम्परा ही परस्पर पूरकता का अर्थात जागृति सहित पूरकता का परम्परा हो पाता है | इसका प्रत्यक्ष रूप अभिभावक जब अपने सन्तान को पारंगत अथवा जागृत बनाता है अर्थात चेतना विकास मूल्य शिक्षा में पारंगत बनाता है तभी सफल होता है | इस प्रकार परिवार परम्परा तैयार होना ही जागृत मानव परम्परा है | जागृत मानव परम्परा में सर्वाधिक मानव भ्रम एवं अपराध-मुक्त होता है |

अर्थात जागृत मानव परम्परा का निरंतरता को पाना सम्भव होता है | संग्रह, सुविधा विधि से परम्परा अवश्य स्थापित हुआ लेकिन यह अपराध प्रवृत्ति का आधार बन गया जिसको शिक्षा में लाभोन्मादी शिक्षा, भोगोन्मादी शिक्षा, कामोन्मादी शिक्षा के रूप में देखा जा सकता है तथा समुदाय विधि से संघर्ष और युद्ध के रूप में पहचाना जा सकता है | यह पाँचो भाग अपराध कृत्य अथवा साहसिक कृत्य के रूप में पहचाना जाता है | इस पहचान से व्यक्तिवाद एवं समुदायवाद ही पनपा है | समाज जब भी बनेगा अखण्ड समाज ही बनेगा | धरती एक ही राष्ट्र होगा तभी मानव विकसित चेतना विधि से देव चेतना एवं दिव्य चेतना का परम्परा प्रमाण प्रस्तुत करना बनता है | अखंडता ही देव चेतना और सार्वभौमता ही दिव्य चेतना है | यह मानव चेतना सहज न्याय परम्परा विधि से सार्थक हो पाता है; जिससे अखण्ड समाज तथा सार्वभौम व्यवस्था दोनों प्रकट होने की सम्भावना है; जिससे ही भ्रम-मुक्ति, अपराध-मुक्ति की व्यवस्था है | विकसित चेतना क्रम में सर्वप्रथम अपराध मुक्त होना, द्वितीय भ्रम मुक्त होना, तृतीय अपना पराया के दीवाल से मुक्त होना | मुक्ति को दुसरे विधि से बताया है : आशा बंधन से मुक्ति, विचार बंधन से मुक्ति, इच्छा बंधन से मुक्ति |

इस ढंग से मानव परम्परा भ्रम-मुक्त, अपराध-मुक्त होने पर धरती अपने में कितना सम्भलता है इसको परीक्षण करना ही सभी मानव का मूल कर्तव्य है; क्योंकि मानव भ्रम एवं अपराधपूर्वक सभी अपराधिक क्रियाओं को करता है | इसके विपरीत जागृति पूर्वक समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व पूर्वक, विकसित चेतना पूर्वक जीना एक अनिवार्य स्थिति है जिससे ही मानव में संस्कृति, सभ्यता परिवार शिक्षा से सम्पन्न होना पाया जाता है | क्योंकि विकसित चेतना परिवारमूलक विधि से लोकव्यापीकरण होना सहज है जिसका सूत्र शैक्षणिक विधि से प्राप्त होना सहज है | इसी क्रम में मानव में मानवत्व, देवत्व, दिव्यत्व पूर्वक जीना होता है | इस प्रकार मानव धर्म निरंतर रूप में होने की सम्भावना है |

सर्वशुभ हो! जय हो! मंगल हो! कल्याण हो!

- ए. नागराज | प्रणेता एवं लेखक - मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्ववाद) | भजनाश्रम, अमरकंटक, जिला-अनूपपुर (म. प्र.)